मौर्यकालीन सामाजिक-आर्थिक जीवन :

मौर्यकाल में वर्णाश्रम व्यवस्था पूर्ण रूप से विकसित हो गयी थी। समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र में बंट हुआ था और वर्ण-व्यवस्था में जटिलता आ गयी थी। इसका आधार कर्म न होकर जन्म हो गया था। कोई व्यक्ति एक वर्ण से दूसरे वर्ण का सदस्य नहीं बन सकता था। वर्ण-व्यवस्था की रक्षा करना राजा का प्रमुख कर्तव्य होता। इन चार वर्णों के अतिरिक्त उस समय कुछ अन्य व्यावसायिक समूह विद्यमान थे जिनकी गणना भी चार वर्णों में कर ली जाती थी। मौर्यकालीन सामाजिक व्यवस्था के सन्दर्भ में लिखते हुये विद्वानों ने अधिकांशतः मेगास्थनीज को उद्धृत किया है जिसके अनुसार भारतीय समाज सात वर्णों में विभक्त थी — दार्शनिक, कृषक, सैनिक, चरवाहे, शिल्पी, न्यायाधिकारी एवं पार्षद। इस विभाजन की मूल कमजोरी यह थी कि मेगास्थनीज वर्ण एवं व्यवसाय में अंतर नहीं कर पाया। मेगास्थनीज इस विभाजन में सम्भवतः यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस से प्रभावित दिखता है जिसने मिस्र के समाज को सात भागों में विभाजित किया था।

आर्थिक परिवर्तनों ने चतुर्वर्णीय वैदिक व्यवस्था को आसानी से नहीं चलने दिया। अब वैश्यों तथा शूद्रों का अंतर कम हो गया। ~~शूद्र~~ उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हुई पर उनकी सामाजिक स्थिति में कोई प्रगति नहीं हुई। वे प्रथम दो वर्णों द्वारा सामाजिक रूप से अभी भी बहिष्कृत थे। इसके कारण सामाजिक तनाव बढ़े तथा अंततः गैर-सनातनी सम्प्रदायों की लोकप्रियता में वृद्धि हुई। अशोक ने सामाजिक सौहार्द पर जो अत्यधिक बल दिया है उससे ~~उस~~ तत्कालीन सामाजिक तनावों के अस्तित्व की पुष्टि होती है।

ब्राह्मण साहित्य में यह स्वाभाविक तौर पर माना जाता था कि स्त्रियों की स्थिति पुरुषों की सहायक एवं उससे निम्न हो। बौद्धों का स्त्रियों के प्रति अपेक्षाकृत मानवीय रुख था। मेगास्थनीज बढ़ती हुई बहुपत्नी प्रथा, महल के रक्षक तथा राजा के अंगरक्षक (विशेषकर) के रूप में महिलाओं की नियुक्ति का उल्लेख करता है। वह विधवा पुनर्विवाह तथा तलाक का भी उल्लेख करता है। वेश्यावृत्ति प्रचलित थी तथा राज्य को इससे राजस्व प्राप्त होती। विवाह के प्रचलित आठ प्रकार विद्यमान थे किंतु

Scanned with CamScanner

गन्धर्व, आसुर, राक्षस एवं पैशाच विवाह को अच्छा नहीं माना जाता। कुल मिलाकर महिलाओं की स्थिति में गिरावट आ रही थी लेकिन स्थिति गुप्तकाल जैसी नहीं थी। अशोक ने महिला कल्याण हेतु एक विशेष "स्त्रीअध्यक्ष-महामात्र" नामक अधिकारी नियुक्त किया।

भारत में दासों की अनुपस्थिति से संबंधित मेगास्थनीज का विचार सही नहीं है। पाश्चात्य दास प्रथा (यूनानी एवं रोमन) से बिल्कुल अलग होने के कारण वह शायद इसे नहीं पहचान पाया। लेकिन इनकी उपस्थिति का स्पष्ट प्रमाण हमें बौद्ध ग्रंथों (विशेषकर जातक), कौटिल्य के अर्थशास्त्र एवं अशोक के अभिलेखों में मिलता है। ये मुख्यतः घरेलू कार्यों से जुड़े होते तथा उन्हें निष्पादित कार्य के आधार पर मजदूरी दी जाती थी।

उत्तरमगध समाज मूल रूप से तीन धार्मिक सम्प्रदायों में विभक्त था- वैदिक, बौद्ध और जैन। राज्य की ओर से किसी धर्म पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं था। प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के अनुसार आचरण करने की स्वतंत्रता थी। ब्राह्मण धर्म के अन्तर्गत बहुदेववाद प्रचलित था जिसका उल्लेख अर्थशास्त्र में मिलता है।

मौर्यकाल में खेती के लिए लोहे के उपयोग ने कृषि-क्रांति को प्रोत्साहित किया। इस काल तक आते-2 उत्पादन का भौतिक एवं सामाजिक आधार विस्तृत हो गया था। राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि थी। राज्य ने नवीन भूमि पर खेती को प्रोत्साहित किया तथा इन नवीन कृषि क्षेत्रों में जनसंख्या बहुल इलाकों या विजित राज्यों से श्रमशक्ति उपलब्ध करायी जिसे अर्थशास्त्र में "जनपद-निवेश" कहा गया है। कई मामलों में नयी बस्तियां सीधे राजा के नियंत्रण में होती जिन्हें सीताभूमि कहते थे। इन इलाकों में निश्चित रूप से स्वामित्व, जोत, निलामी और बिक्री पर राज्य का पूर्ण अधिकार था। सीताध्यक्ष इसका पर्यवेक्षक था। मौर्य राज्य के अन्य खेतिहर इलाकों को "जनपद राज्य क्षेत्र" कहा जाता था।

कृषि क्षेत्र में मौर्यकाल की महत्वपूर्ण देन सिंचाई-साधनों का विकास था। मेगास्थनीज का कथन है कि भूमि का अधिकांश क्षेत्र सिंचाई के अन्तर्गत है जिसमें वर्ष में दो-2 फसलें तैयार हो जाती हैं। अर्थशास्त्र से सिंचाई के साधनों की जानकारी मिलती है। सिंचित क्षेत्रों से जल कर के रूप में उत्पादन का पांचवा, चौथाई या तिहाई हिस्सा

Scanned with CamScanner

वसूला जाता था। नहरों द्वारा सिंचाई का एकमात्र अभिलेखीय प्रमाण रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख में वर्णित सुदर्शन झील है।

गंगा के उर्वर मैदानों से कई प्रकार के कर वसूले जाते थे जैसे बलि, भाग, शुल्क आदि। भूराजस्व सम्भवत: उत्पादन के अनुसार भिन्न-2 होता था। मेगास्थनीज जहां उत्पादन का 1/4 भाग बतलाता है वहीं संस्कृत साहित्य इसे 1/6 बतलाते हैं। कृषि पर राजस्व ही आय का मूल स्रोत था। समाहर्ता एवं सन्निधाता क्रमश: राजस्व निर्धारक एवं संग्राहक थे। इन करों के बावजूद "प्रणय-कर" के रूप में राज्य द्वारा आपातकालीन कर वसूला जाता जो कुल उपज का 1/4 या 1/3 होता था। राजस्व संग्रहण के प्रति सचेतता का प्रमाण यह है कि अशोक द्वारा बुद्ध के प्रति अगाध आस्था रखने के बाद भी लुम्बिनी को पूर्णतया करमुक्त नहीं किया गया था। परिहारक गांव यानी करमुक्त गांव विशेष रूप से कृषि भूमि के विस्तार को प्रेरित करने के लिए रहे होंगे। वस्तुत: अधिकाधिक करारोपण साम्राज्य के विशाल नौकरशाही, सैन्य व्यवस्था एवं प्रशासनिक दायित्वों के मद्देनजर मौर्य शासकों की विवशता थी। कौटिल्य ने कर जाल को विस्तृत करने के कई नुस्खे बताये तथा उसने हरसंभव व्यक्ति पर करारोपण किया यहां तक कि वेश्याओं पर भी।

पूर्वकाल से चली आ रही व्यापारिक विकास की प्रक्रिया मौर्यकाल में राजकीय सहायता पाकर और तीव्र हुई। उत्तर भारत में शिल्प हस्तशिल्प उद्योग श्रेणियों के आधार पर संगठित था। व्यापारियों की भी श्रेणियां थीं। श्रेणियों के अतिरिक्त राज्य प्रशासन ने सहयोग किया। राज्य ने वस्तुओं के वितरण को नियंत्रित किया तथा खुद भी उत्पादक बना। कुछ उद्योगों को करमुक्त कर उन्हें प्रोत्साहित किया गया यथा अस्त्र निर्माण, जहाज उद्योग तथा पत्थर उद्योग। खास महत्त्व की वस्तुओं पर राज्य का एकाधिकार था जैसे खनन, हीरे-जवाहरात बहुमूल्य नग, घोड़े इत्यादि। राज्य द्वारा उत्पादित वस्तुएं राजपण्य कही जाती थी। पण्याध्यक्ष व्यापार-वाणिज्य अधिकारी था। व्यापारियों को चुंगी एवं कर देने पड़ते थे जो वस्तु मूल्य के 1/5 से 1/25 वें हिस्से तक होता था।

व्यापारिक मार्गों के विकास में राज्य ने रुचि दिखलाई। व्यापार मार्ग के मुख्य रूप में बड़ी सड़कों के अलावा नदियों का भी प्रयोग हुआ। सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजमार्ग वह था जो गंगा के साथ-2 ताम्रलिप्ति जाता। ताम्रलिप्ति से जहाज श्रीलंका एवं सुवर्णभूमि (बर्मा) को

Scanned with CamScanner

जाते थे। पाटलिपुत्र से जुड़ा उज्जैन के रास्ते एक अन्य मार्ग था जो पश्चिम की ओर भड़ौंच से मिला हुआ था। भड़ौंच से बैलों की लम्बी यात्रा होती थी। उत्तर के मुकाबले दक्षिण की ओर यातायात अभी कीमियां

मौर्यकाल में कपड़े का व्यवसाय काफी उन्नत अवस्था में था। इसके लिए काशी, वत्स, अपरांत, कंग और मदुरा विशेष रूप से विख्यात थे। कल का प्रयोग भी वस्त्र-निर्माण में होता था। मगध, पुंड्र और सुवर्णकुंड देशों में विविध वृक्ष के पत्तों तथा छाल के रेशों से कपड़े बनाये जाते थे। ऊनी कपड़ा का भी वर्णन अर्थशास्त्र में है। मेगास्थनीज एवं कौटिल्य बहुमूल्य कपड़ों का उल्लेख करता है। पाटलिपुत्र नगरपालिका की एक विशेष समिति राजधानी में बनी वस्तुओं का देखभाल करती थी।

राज्य नियंत्रित आर्थिक प्रगति ने शहरीकरण को प्रोत्साहित किया। शहर में अधिकांशतः शिल्पी, व्यापारी और कर्मचारी रहते थे। अर्थशास्त्र में वर्णित 'दुर्ग-निवेश' या दुर्ग-विधान' शब्द से पता चलता है कि शहरों को दीवारों द्वारा घेराबंदी कर सुरक्षा दी गयी थी। ये आगंतुकों के एक प्रमुख स्रोत थे। मेगास्थनीज नगर-प्रशासन की जो जानकारी देता है उससे स्पष्ट है कि वह में चार समितियां आर्थिक क्रियाकलापों से सम्बद्ध थी। ये समितियां औद्योगिक उत्पादन तथा बिक्री का निरीक्षण करती तथा बिक्री कर वसूलती थी।

अर्थव्यवस्था के मुद्रीकरण से व्यापार-वाणिज्य और कला फला-फूला। अब मुद्रा आम उपयोग की चीज हो गयी। अधिकारियों को नकद वेतन दिया जाने लगा। मौर्यकालीन 'पंचमार्क सिक्के' इस बात के प्रमाण हैं कि मौर्यों ने मुद्रा अर्थव्यवस्था को लागू किया।

संक्षेपमें, मौर्यों के अधीन कबीलाई अर्थव्यवस्था का रूपांतरण राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था में हुआ जिसने भौतिक वृद्धि को उत्पन्न किया। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि अत्यधिक करारोपण से जनता पर भार पड़ा होगा लेकिन इसी के द्वारा राज्य ने अपने को कला संस्कृति के विकास एवं लोक कल्याण से सम्बद्ध किया।